Riyasat IAS Mentorship

Secure Prelims Program 2026

English - हिंदी माध्यम

AN INITIATIVE UNDER RIYASAT IAS MENTORSHIP

Shaping Potential Into Performance

Riyasat Ali Sir

IAS Mentor Since 2011

INTENSIVE & INTERATED

Prelims GS & CSAT PROGRAM

to Crack CSE 2026

आधुनिक इतिहास डेमो नोट्स - हिंदी मीडियम

More Information: 8090528260, 9319612575, 9266989092

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

भारत में **19वीं सदी** के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन **औपनिवेशिक शासन**, **पश्चिमी शिक्षा**, **ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ** तथा **सती**, **बाल विवाह**, **बहुपत्नी प्रथा**, **जातीय उत्पीड़न**, और **अछूतपन** जैसी आंतरिक **सामाजिक बुराइयों** द्वारा उत्पन्न चुनौतियों की प्रतिक्रिया थे।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की वैचारिक आधारशिला

तर्कवाद: राजा राममोहन राय द्वारा समर्थित। • **तर्क**, **विधवा पुनर्विवाह** पर ज़ोर, **बाल विवाह** और **बहुपत्नी प्रथा** का विरोध।	**धार्मिक सार्वभौमिकता:** • **नेता: राजा राममोहन राय**, **सैयद अहमद खान**, **केशव चंद्र सेन**। • **एकता**, **समानता** पर ज़ोर, और **जाति भेदभाव** की आलोचना।	**मानवतावाद: मानव कल्याण**, **नैतिक मूल्यों** पर केंद्रित। • **धर्म** को **सामाजिक प्रगति** का साधन माना गया।

सुधार आंदोलनों की दो धाराएँ:

सुधारवादी आंदोलन:	• **उद्देश्य: धर्म** और **समाज** में **तर्क**, **विवेक**, और **मानव अंत:करण** के प्रयोग से सुधार करना। • **दृष्टिकोण: अंधविश्वास**, **मूर्तिपूजा**, और **सामाजिक बुराइयों** की आलोचना; **आधुनिक शिक्षा**, **महिलाओं के अधिकार**, **सामाजिक समानता** पर ज़ोर।
पुनरुत्थान वादी आंदोलन:	• **उद्देश्य: धार्मिक शुद्धता**, **वैदिक मूल्य**, और **परंपरागत आध्यात्मिकता** को पुनर्जीवित करना, साथ ही **सामाजिक मुद्दों** का समाधान करना। • **दृष्टिकोण: शास्त्रों** की ओर लौटने, **आध्यात्मिक एकता**, और **नैतिक पुनरुत्थान** पर ज़ोर; **पुनरुत्थान** को **सुधार** के साथ जोड़ा गया।

महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु उठाए गए कदम:

सती प्रथा का उन्मूलन (1829)	• **राजा राममोहन राय** के नेतृत्व में **सुधार आंदोलन**। • **नियम XVII, 1829 (बंगाल संहिता)** → **सती प्रथा** को **अवैध** घोषित किया गया और इसे **दंडनीय अपराध (हत्या)** माना गया। • प्रारंभ में केवल **बंगाल प्रेसीडेंसी** में लागू हुआ; 1830 में इसे **मद्रास** और **बॉम्बे प्रेसीडेंसी** में भी लागू किया गया (थोड़े परिवर्तनों के साथ)।
कन्या भ्रूण/नवजात हत्या की रोकथाम	• यह प्रथा **उच्च वर्गीय बंगालियों** और **राजपूतों** में प्रचलित थी (कन्याओं को **आर्थिक बोझ** माना जाता था)। • **बंगाल विनियम 1795 व 1804** → **कन्या हत्या** को **अवैध** और **हत्या** के समान माना गया। • **अधिनियम 1870** → जन्म का **अनिवार्य पंजीकरण**, और उन क्षेत्रों में **कन्याओं की जांच**, जहाँ **गुप्त हत्या** की प्रथा थी।
विधवा पुनर्विवाह:	• **ब्रह्म समाज** → ने **विधवा पुनर्विवाह** का प्रचार किया। • **पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर** (1820–91), **संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता** के प्राचार्य → ने **वैदिक ग्रंथों** का हवाला दिया, जिसके परिणामस्वरूप **हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856** बना → **<u>पुनर्विवाह को वैध</u>** ठहराया गया और ऐसे विवाह से जन्मे बच्चों को **वैध संतान** माना गया।

बाल विवाह पर नियंत्रण:	• **नेटिव मैरिज एक्ट / सिविल मैरिज एक्ट, 1872** → **बाल विवाह** को रोकने का प्रयास (सीमित प्रभाव; **हिंदुओं, मुस्लिमों** व अन्य धर्मों पर लागू नहीं था)। • **बी.एम. माला-बारी** (**पारसी सुधारक**) → निरंतर प्रयास करते रहे। • **एज ऑफ कंसेंट एक्ट, 1891** → **12 वर्ष** से कम उम्र की बालिकाओं के विवाह पर रोक। • **शारदा अधिनियम, 1930** → विवाह की उम्र **18 वर्ष (लड़के)** और **14 वर्ष (लड़कियाँ)** की गई। • **बाल विवाह निषेध (संशोधन) अधिनियम, 1978** → उम्र **21 (लड़कों)** और **18 (लड़कियों)** तक बढ़ाई गई।
महिलाओं की शिक्षा:	• **ईसाई मिशनरियों** ने **कलकत्ता फीमेल जुवेनाइल सोसायटी (1819)** की स्थापना की। • **बेथ्यून स्कूल, कलकत्ता (1849)** → **जे.ई.डी. बेथ्यून** द्वारा स्थापित (**शिक्षा परिषद के अध्यक्ष**)। • **ईश्वर चंद्र विद्यासागर: बंगाल** में **35 बालिका विद्यालयों** से जुड़े; **महिला शिक्षा** के अग्रदूत। • **चार्ल्स वुड का डिस्पैच (1854)** → ने **महिला शिक्षा** की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। • **इंडियन विमेंस यूनिवर्सिटी (1916)** → **डी.के. कर्वे** द्वारा स्थापित; एक ऐतिहासिक संस्थान। • **लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली (1916)** → **महिलाओं की मेडिकल शिक्षा** हेतु आरंभ किया गया।
राजनीतिक भागीदारी (20वीं सदी की शुरुआत):	• महिलाओं ने **स्वदेशी**, **विभाजन विरोधी**, और **होम रूल आंदोलनों** में भाग लिया। • **सरोजिनी नायडू** → **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष (1925)**; बाद में **संयुक्त प्रांतों की राज्यपाल (1947–49)** रहीं।

महिला संगठन:

भारत स्त्री महामंडल	• **1910, इलाहाबाद, सरला देवी चौधुरानी** द्वारा आयोजित। • **उद्देश्य: महिला शिक्षा** का प्रसार, **पर्दा प्रथा का उन्मूलन**, और महिलाओं की **सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में सुधार**।
लेडीज सोशल कॉन्फ्रेंस	**(भारत महिला परिषद, 1904, बॉम्बे):** → **रामाबाई रानाडे** द्वारा **नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस** के तहत स्थापित।

आर्य महिला समाज	• **पंडिता रमाबाई सरस्वती** द्वारा स्थापित। • **महिला पाठ्यक्रम में सुधार** हेतु **इंग्लिश एजुकेशन कमीशन** के समक्ष निवेदन किया। • **लेडी डफरिन कॉलेज** में महिलाओं के लिए **चिकित्सा शिक्षा** की शुरुआत हुई। • **रामाबाई रानाडे** ने बाद में **बॉम्बे में एक शाखा** खोली।
अखिल भारतीय महिला सम्मेलन	• **मार्गरेट कज़िन्स** द्वारा स्थापित; पहली कांफ्रेंस **फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे** में हुई। • **संस्थापक सदस्य: महारानी चिमनाबाई गायकवाड़, सांगली की रानी साहिबा, सरोजिनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, लेडी दोराब टाटा**।
नेशनल काउंसिल ऑफ वीमेन इन इंडिया (1925)	• **इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ वीमेन** की एक शाखा। • **मुख्य नेता: मेहरिबाई टाटा** → महिलाओं के लिए **पर्दा, जाति**, और **शिक्षा की कमी** को बाधा के रूप में आलोचित किया। • **अन्य प्रमुख सदस्य:** ○ **कॉर्नेलिया सुराबजी → भारत की पहली महिला बैरिस्टर**। ○ **ताराबाई प्रेमचंद, शफ्फी त्यागी, महारानी सुचरू देवी (केशव चंद्र सेन की पुत्री)**।

महिलाओं से संबंधित विधायन:

शारदा अधिनियम (1929), हिंदू महिला संपत्ति अधिकार अधिनियम (1937), कारखाना अधिनियम (1947), हिंदू विवाह और तलाक अधिनियम (1954), विशेष विवाह अधिनियम (1954), हिंदू अल्पसंख्यक और अभिभावकता अधिनियम (1956), हिंदू दत्तक ग्रहण और भरण-पोषण अधिनियम (1956), अनैतिक देह व्यापार निवारण अधिनियम (1958), मातृत्व लाभ अधिनियम (1961), दहेज निषेध अधिनियम (1961), और समान वेतन अधिनियम (1958, 1976)।

प्रमुख महिला नेता और उनका योगदान:

सावित्रीबाई फुले (1831–1897)

- भारत की **पहली महिला शिक्षिका**, जिन्होंने अपने पति **ज्योतिराव फुले** के साथ मिलकर **1848 में पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय** खोला।
- महिलाओं को **शिक्षा और जागरूकता** के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए **'महिला सेवा मंडल'** की स्थापना की
- **छुआछूत, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव** जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए कार्य किया।

- **'बाल हत्या प्रतिबंधक गृह'** की स्थापना की, जहाँ **गर्भवती विधवाओं** की देखभाल की जाती थी और **कन्या भ्रूण हत्या** को रोका जाता था।
- उन्होंने शिक्षा को **दलितों और महिलाओं की मुक्ति का हथियार** बताया।
- वे भारत की **पहली महिला प्रधानाध्यापिका** बनीं और **महाराष्ट्र में सामाजिक क्रांति का प्रतीक** बनीं।

पंडिता रमाबाई सरस्वती (1858–1922)

- एक **संस्कृत विदुषी और समाज सुधारक**, जिन्हें उनकी विद्वता के लिए **'पंडिता'** की उपाधि दी गई।
- **"The High-Caste Hindu Woman" (1887)** पुस्तक लिखी, जिसमें हिंदू पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं पर होने वाले **उत्पीड़न** का खुलासा किया।
- **शारदा सदन (विधवा गृह)** की स्थापना **1889 में पुणे** में की और बाद में **केडगांव में मुक्ति मिशन** स्थापित किया।
- **शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और सामाजिक पुनर्वास** के लिए कार्य किया।
- धार्मिक रूढ़िवाद की आलोचना की और शिक्षा के माध्यम से **नैतिकता और सामाजिक चेतना** में परिवर्तन का आह्वान किया।
- महिलाओं की **आर्थिक स्वतंत्रता** को गरिमा के लिए आवश्यक बताया।

रमाबाई रानाडे (1862–1924):

- न्यायमूर्ति **एम.जी. रानाडे** की पत्नी; **प्रार्थना समाज** की सामाजिक सुधार गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाई।
- **सेवा सदन (1908)** की स्थापना **पुणे में** की, जो **महिलाओं की शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और आश्रय** के लिए समर्पित था।
- **महिला साक्षरता और घरेलू सुधारों** को अपने लेखन और भाषणों के माध्यम से बढ़ावा दिया।
- **विधवा upliftment** और **मध्यमवर्गीय महिलाओं में सामाजिक जागरूकता** के लिए काम किया।
- **भारत महिला परिषद** की अध्यक्ष के रूप में **नैतिक और नागरिक शिक्षा** की वकालत की।

सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट नोबल) (1867–1911)

- आयरलैंड की महिला, जो **स्वामी विवेकानंद** की शिष्या बनीं और भारत की सेवा में जीवन समर्पित किया
- **राष्ट्रीय शिक्षा**, विशेष रूप से **लड़कियों के लिए शिक्षा**, को प्रोत्साहित किया; **कोलकाता में गरीब बच्चों के लिए विद्यालय** खोले
- भारतीय महिलाओं को उनके **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गौरव** पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया।
- महिलाओं में **आत्मनिर्भरता और देशभक्ति** की भावना जगाई।
- **जगदीश चंद्र बोस** जैसे वैज्ञानिकों और **स्वदेशी आंदोलन** के नेताओं का समर्थन किया।

एनी बेसेंट (1847–1933)

- **थियोसोफिस्ट, शिक्षाविद् और समाज सुधारक**, जिन्होंने महिलाओं के **आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्थान** पर बल दिया।
- **सेंट्रल हिंदू कॉलेज (1898)** की स्थापना की, जो बाद में **काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)** का हिस्सा बना।
- **इंडियन होम रूल आंदोलन** का समर्थन किया और महिलाओं की भागीदारी को प्रेरित किया।
- **थियोसोफिकल सोसाइटी** के स्कूलों की स्थापना की, जहाँ **चरित्र निर्माण, नैतिक सुधार और महिला नेतृत्व** पर जोर दिया गया।
- महिलाओं को **सार्वजनिक जीवन और राष्ट्रीय आंदोलनों** में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सरोजिनी नायडू (1879–1949)

- कवयित्री, वक्ता और राष्ट्रवादी नेता, जिन्हें **'भारत कोकिला' (Nightingale of India)** कहा गया।
- **महिला समानता और स्वतंत्रता** के विचारों से प्रेरित होकर सामाजिक और राजनीतिक सुधारों में भाग लिया।
- **1917 में भारतीय महिला सम्मेलन (Indian Women's Conference)** के माध्यम से **महिला शिक्षा, मताधिकार और समान अधिकारों** के लिए कार्य किया।
- **राजनीति में महिलाओं की भागीदारी** का समर्थन किया और **राष्ट्रीय आंदोलन** में महिला सशक्तिकरण को जोड़ा।
- **1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष** बनीं और बाद में **उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल** बनीं।

बेगम रुकैया सखावत हुसैन (1880–1932)

- **बंगाली मुस्लिम सुधारक और मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की अग्रदूत:** उन्होंने मुस्लिम समाज में महिलाओं के लिए आधुनिक शिक्षा के द्वार खोले।
- **सखावत मेमोरियल गर्ल्स स्कूल (1911), कलकत्ता की संस्थापक:** यह स्कूल मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के लिए एक ऐतिहासिक पहल थी।
- **"सुल्ताना का सपना" (1905) की लेखिका:** यह एक नारीवादी कल्पना-लोक कथा थी जिसमें महिलाओं द्वारा शासित आदर्श समाज की परिकल्पना की गई थी।
- **पर्दा प्रथा, अशिक्षा और लैंगिक विभाजन की विरोधी:** उन्होंने मुस्लिम समाज में महिलाओं के सामाजिक अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष किया।
- **अंजुमन-ए-खवातीन-ए-इस्लाम के माध्यम से आधुनिक शिक्षा और तर्कशील विचारों का प्रचार:** उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने का कार्य किया।

दुर्गाबाई देशमुख (1909–1981)

- **आंध्र महिला सभा (1937) की संस्थापक:** उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और असहाय महिलाओं के पुनर्वास के लिए कार्य किया।
- **महिला सशक्तिकरण की विरासत को आगे बढ़ाने वाली:** उन्होंने पहले सुधारकों की परंपरा को 20वीं सदी में भी जीवित रखा।
- **संविधान सभा की सदस्य:** उन्होंने समाज कल्याण और महिला अधिकारों से जुड़े नीतिगत मुद्दों की वकालत की।

स्वर्णकुमारी देवी (1855–1932)

- **रवीन्द्रनाथ टैगोर की बहन, लेखिका और समाज सुधारक:** उन्होंने साहित्य और समाज दोनों क्षेत्रों में योगदान दिया
- **भारत स्त्री महामंडल (1910) की संस्थापक:** यह भारत का पहला महिला संगठन था जिसने महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा दिया
- **पर्दा प्रथा के विरोध और महिला शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण की समर्थक:** उन्होंने महिलाओं को सामाजिक रूप से स्वतंत्र और शिक्षित बनाने के लिए निरंतर कार्य किया।

जाति आधारित शोषण के खिलाफ संघर्ष:

- **सामाजिक सुधार आंदोलन:**
  - **संगठन: ब्रह्मो समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिस्ट, सोशल कॉन्फ्रेंस।**
  - **अछूतों में शिक्षा का प्रसार किया, मंदिर प्रवेश** तथा **तालाब/पोखरों के उपयोग** पर लगी पाबंदियाँ हटाईं + **अस्पृश्यता, वंशानुगत जाति विभाजन** और **कर्म सिद्धांत** की आलोचना की।

  - **आर्य समाज → उप-जातियों के विरुद्ध संघर्ष किया; निम्नतम जातियों को शास्त्र अध्ययन का अधिकार देने का समर्थन किया।**
- **राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीतिक संघर्ष:**
  - **कांग्रेस प्रांतीय सरकारों (1937)** → कुछ प्रांतों में **हरिजनों के लिए मुफ्त शिक्षा।**
  - **त्रावणकोर, इंदौर, देवास के शासकों** ने **सभी के लिए राज्य मंदिर खोल दिए।**

- **गांधी** → **अस्पृश्यता के विरुद्ध लड़े**; उन्होंने कहा कि **शास्त्र इसकी अनुमति नहीं देते**।
  - **अखिल भारत हरिजन संघ (1932)** की स्थापना की।

- **निम्न जातियों का जागरण और नेता:**
  - **बी.आर. अंबेडकर** → गंभीर जातीय भेदभाव का सामना किया, उच्च जातियों के अत्याचारों के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया।
    - **अखिल भारतीय अनुसूचित जाति महासंघ** और **अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ** की स्थापना की।
    - **राष्ट्रीय प्रगति के लिए जाति विनाश की वकालत की।**
    - **भारत सरकार अधिनियम 1935** में **दलित वर्गों के लिए विशेष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया**।
  - **श्री नारायण गुरु (केरल)** → **आजीवन संघर्ष**, नारा: **"एक धर्म, एक जाति, एक ईश्वर – मानव जाति के लिए"** (शिष्य **सहदरन अय्यप्पन** ने इसे संशोधित कर दिया: **"कोई धर्म नहीं, कोई जाति नहीं, कोई ईश्वर नहीं"**)।

- **अंबेडकर के आंदोलन**
  - **बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1924)** → आदर्श वाक्य: **"शिक्षित बनो, आंदोलित बनो, संगठित होओ"**।
  - **महाड़ सत्याग्रह (1927)** → **2,500 दलितों ने चौदार तालाब से पानी पिया**; बाद में **मनुस्मृति का दहन किया (दिसंबर 1927)**।

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन और उनके नेता

राजा राममोहन राय:

राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधार प्रयास:

- **सती प्रथा के विरुद्ध अभियान: 1818** में संघर्ष की शुरुआत की।
  - **पवित्र ग्रंथों** का हवाला दिया → सती प्रथा के लिए कोई धार्मिक अनुमति नहीं।
  - **सफलता: गवर्नमेंट रेगुलेशन XVII, 1829 → सती को अपराध** घोषित किया गया।
- **महिला अधिकार: बहुपत्नी प्रथा** और विधवाओं की दयनीय स्थिति पर प्रहार किया।
- **आधुनिक शिक्षा का प्रसार:**
  - **डेविड हेयर** का समर्थन किया → **1817 में हिंदू कॉलेज** की स्थापना।

- उनके **अंग्रेजी विद्यालय** में **यांत्रिकी और वोल्टेयर का दर्शन** पढ़ाया जाता था
- **1825 में वेदांत कॉलेज** की स्थापना की → **भारतीय ज्ञान + पश्चिमी विज्ञान** पढ़ाए गए।
- **बंगाली व्याकरण** में योगदान दिया और **आधुनिक गद्य शैली** विकसित की।

- **भाषायी योगदान: 12** से अधिक **भाषाओं का ज्ञान** → संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच,लैटिन, ग्रीक, हिब्रू आदि।
- **मुद्रण व पत्रकारिता की स्वतंत्रता: बंगाली, हिंदी, अंग्रेज़ी और फारसी** में पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं → जनता को शिक्षित किया और सरकार के सामने शिकायतें प्रस्तुत कीं।
- **अंतरराष्ट्रीयता: सार्वभौमिक स्वतंत्रता, समानता, न्याय पर बल** दिया + **नेपल्स और स्पेनिश-अमेरिकी क्रांतियों का समर्थन** किया

ब्रह्मो समाज:

- **राजा राममोहन राय (1772-1833)**
  - **भारतीय नवजागरण के जनक** और **आधुनिक भारत के निर्माता** के रूप में प्रसिद्ध।
  - एक **बहुआयामी प्रतिभा** वाले व्यक्ति → **आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय गरिमा** और **सामाजिक समानता** का संगम।
- **एकेश्वरवाद में विश्वास: "गिफ्ट टू मोनोथीइस्ट्स" (1809)** लिखा। इसे बंगाली में अनुवादित किया → वेदों और पाँच उपनिषदों के माध्यम से हिंदू ग्रंथों में **एकेश्वरवाद के समर्थन** को सिद्ध किया।
- **धार्मिक तर्कवाद: *प्रेसेप्ट्स ऑफ जीसस* (1820)** में → न्यू टेस्टामेंट के नैतिक और दार्शनिक संदेश को चमत्कारी कहानियों से अलग किया।
- **आत्मीय सभा की स्थापना (1814, कलकत्ता):** जिसे ***सोसाइटी ऑफ फ्रेंड्स*** भी कहा जाता है।
  - **उद्देश्य:** वेदांत के **एकेश्वरवाद का प्रचार, मूर्तिपूजा, जातीय कठोरता, निरर्थक अनुष्ठानों और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध** अभियान।
  - **कहा: वेदांत तर्क पर आधारित है** → यदि तर्क की माँग हो तो शास्त्रों से हटना उचित है।

ब्रह्म सभा (1828, कलकत्ता):

- बाद में इसका नाम **ब्रह्म समाज** रखा गया।
- **उद्देश्य: अनंत, अगम्य, अपरिवर्तनीय सत्ता** (सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता) की उपासना।
- **उपासना:** प्रार्थना, ध्यान, उपनिषदों का वाचन।
- **कोई मूर्ति, चित्र, प्रतिमा, पेंटिंग नहीं** → मूर्तिपूजा और अनुष्ठानों का विरोध।
- दीर्घकालिक एजेंडा: **हिंदू धर्म का शुद्धिकरण, एकेश्वरवाद का प्रचार** → **तर्क + वेद + उपनिषदों** पर आधारित।
- अन्य धर्मों की शिक्षाओं को आत्मसात किया, **मानवीय गरिमा** पर बल दिया और **सती** जैसी सामाजिक बुराइयों का **विरोध** किया।
- **नया धर्म** बनाने का उद्देश्य **नहीं** था → केवल **हिंदू धर्म को शुद्ध** करना चाहा।

रूढ़िवादी विरोध:

- **राजा राधाकांत देव** ने ब्रह्म समाज का मुकाबला करने के लिए **धर्म सभा** का आयोजन किया।
- **राममोहन राय की मृत्यु (1833)** → ब्रह्म समाज के मिशन को झटका लगा।

ब्रह्म समाज की विशेषताएँ:

- **बहुदेववाद और मूर्तिपूजा की निंदा** की।
- **दैवी अवतारों (इन्कारनेशन) में विश्वास को त्याग।**
- किसी भी धर्मग्रंथ की पूर्ण और अंतिम सत्ता को नकार दिया → **मानव तर्क से ऊपर कुछ नहीं।**
- **कर्म** और **आत्मा के पुनर्जन्म** पर तटस्थ रहे → इसे व्यक्तिगत ब्रह्मों पर छोड़ दिया।
- **जाति प्रथा की आलोचना की।**
- **सामाजिक सुधारों के माध्यम से राजनीतिक उत्थान का लक्ष्य** रखा → राष्ट्रवादी स्वर झलकते थे।

देबेंद्रनाथ टैगोर और ब्रह्म समाज:	• **महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर: रवींद्रनाथ टैगोर** के पिता।
	  ○ **1842 में ब्रह्म समाज में शामिल** होने के बाद इसे **नया जीवन और स्पष्ट रूप** दिया।
	• **तत्त्वबोधिनी सभा (1839):**
	  ○ **देबेंद्रनाथ टैगोर** इसके प्रमुख बने।
	  ○ इसकी पत्रिका **तत्त्वबोधिनी पत्रिका** (बंगाली) ने भारत के अतीत के व्यवस्थित अध्ययन को तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से बढ़ावा दिया।

	○ **हिंदू धर्म के भीतर: सुधार आंदोलन** (विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा, बहुपत्नी प्रथा का उन्मूलन, रैयतों का उत्थान, नशा-त्याग का समर्थन)। ○ **हिंदू धर्म के बाहर: ईसाई मिशनरियों का कड़ा विरोध** किया क्योंकि वे हिंदू धर्म पर आक्रमण और धर्मांतरण कर रहे थे।
केशवचंद्र सेन और ब्रह्म समाज:	• **केशवचंद्र सेन का उदय: 1858 में ब्रह्म समाज में शामिल** हुए, शीघ्र ही देबेंद्रनाथ के अधीन **आचार्य** बने + **उत्तर प्रदेश, पंजाब, बॉम्बे, मद्रास** में शाखाएँ खोलीं। • **देबेंद्रनाथ के साथ वैचारिक मतभेद:** केशवचंद्र सेन ने **कॉस्मोपॉलिटनाइजेशन** का समर्थन किया → समाज में सभी धर्मों की शिक्षाओं को शामिल करने की बात की। • उन्होंने **अंतरजातीय विवाह** का समर्थन किया, जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया। • **1865** में उन्हें **आचार्य** के पद से हटा दिया गया।

ब्राह्मो समाज और इसके विभाजन

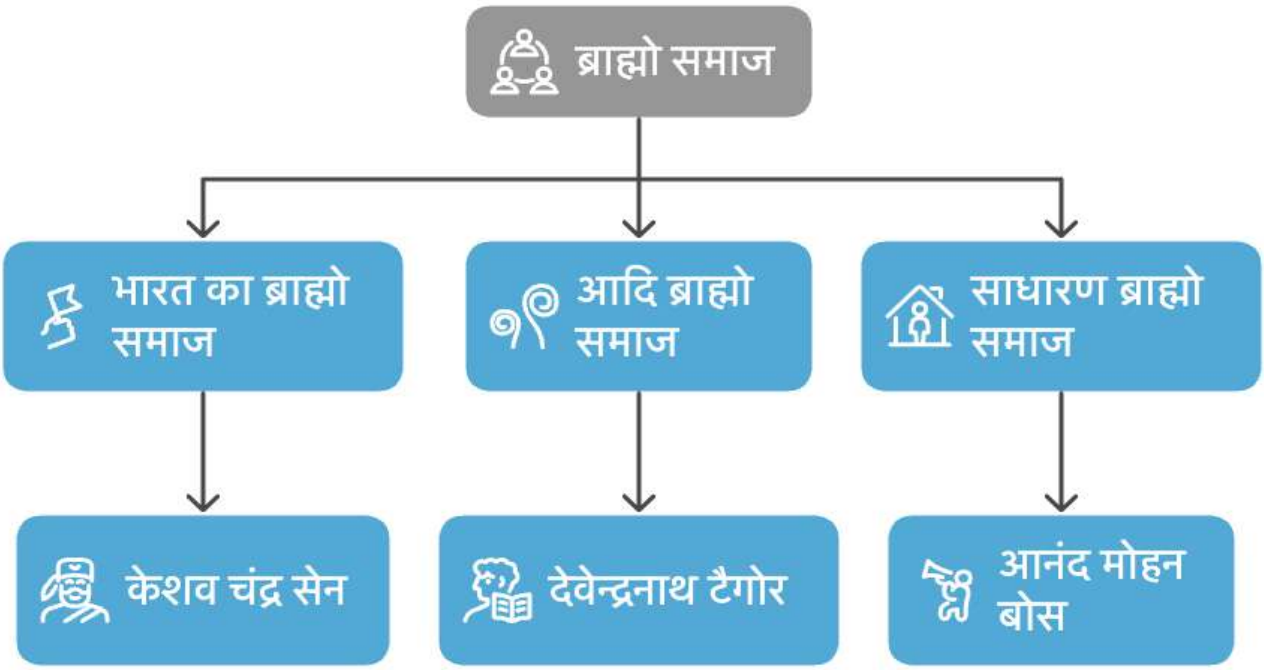

सामाजिक-धार्मिक सुधारक एवं संगठन:	
प्रार्थना समाज:	• प्रार्थना समाज ने **भक्ति** की परंपरा का अनुसरण किया, जो सभी जातियों की आध्यात्मिक समानता में विश्वास करता था। • **स्थापना: बॉम्बे (1867)** में **आत्माराम पांडुरंग** द्वारा, **केशवचंद्र सेन** के सहयोग से। • **पूर्ववर्ती संगठन: परमहंस सभा** (एक गुप्त समाज जिसका उद्देश्य उदार विचार फैलाना और जाति व साम्प्रदायिक बाधाओं को तोड़ना था)। • **महत्वपूर्ण नेता:** ○ **एम.जी. रानाडे (1842-1901)** → 1870 में शामिल हुए, समाज को अखिल-भारतीय स्वरूप दिया + **आर.जी. भांडारकर** + **एन.जी. चंदावरकर (1855-1923)**। • **वैचारिक आधार:** एकेश्वरवाद पर जोर + महाराष्ट्र की भक्ति परंपरा से गहरा संबंध। ○ शिक्षा और समझाने पर भरोसा, न कि परंपरावादियों से टकराव पर। • **सामाजिक सुधार कार्य:** ○ **एम.जी. रानाडे** और **डी.के. कर्वे** → विधवा पुनर्विवाह आंदोलन और **विधवा गृह संघ** की स्थापना की ताकि विधवाओं को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा सके। ○ **विष्णु शास्त्री** ने भी उनके साथ मिलकर सुधारों का नेतृत्व किया।
यंग बंगाल आंदोलन और हेनरी विवियन डिरोज़ियो:	• **उत्पत्ति व काल: 1820 के अंतिम दशक-1830 के दशक** में **बंगाल** में उभरा। ○ **नेता: हेनरी विवियन डिरोज़ियो (1809-31)**, **एंग्लो- इंडियन** शिक्षक, **हिंदू कॉलेज (1826-1831)** में। • **वैचारिक प्रभाव:** ○ **फ्रांसीसी क्रांति** से प्रेरित। ○ छात्रों को **स्वतंत्र और तर्कसंगत** ढंग से सोचने, **प्राधिकरण पर सवाल उठाने**, **स्वतंत्रता, समानता, स्वतंत्र विचारों का समर्थन करने और सामाजिक बुराइयों व परंपराओं का विरोध** करने के लिए प्रेरित किया। ○ डिरोज़ियो को आधुनिक **भारत का पहला राष्ट्रवादी कवि** माना जाता है।

	○ **अल्पकालिक प्रभाव**; **1831** में उग्र विचारों के कारण **हिंदू कॉलेज** से बर्खास्त कर दिए गए।
ईश्वर चंद्र विद्यासागर:	• **दर्शन और विचार:** ○ भारतीय और पश्चिमी विचारों का मिश्रण, **गहन मानवता-वादी**, **उच्च नैतिक मूल्यों में विश्वास** रखने वाला। • **शैक्षिक जीवन:** ○ **1850** में **संस्कृत कॉलेज** के प्राचार्य बने। ○ कॉलेज को **गैर-ब्राह्मणों** के लिए खोला, जिससे शास्त्रीय शिक्षा पर पुजारियों का एकाधिकार टूटा ○ **संस्कृत पाठ्यक्रम** में **पश्चिमी विचारों** को शामिल किया। ○ एक नया **बंगाली वर्णमाला पुस्तक** बनाई और **आधुनिक गद्य शैली विकसित** की। • **सामाजिक सुधार प्रयास:** ○ **विधवा पुनर्विवाह** के प्रबल समर्थक → विधवा पुनर्विवाह को **वैधता** दिलाई। ○ **बाल विवाह** और **बहुपत्नी प्रथा** के कट्टर विरोधी। ○ सरकारी **स्कूल निरीक्षक** के रूप में 35 बालिका विद्यालयों का संगठन किया, जिनमें से कई उनके निजी खर्च पर चलते थे। ○ **बेथ्यून स्कूल (1849, कलकत्ता)** के **सचिव** के रूप ○ में → **महिलाओं** की **उच्च शिक्षा के अग्रदूत** बने।
बालशास्त्री जांभेकर:	• **मराठी पत्रकारिता के जनक** कहे जाते हैं। • **1832** में **दर्पण** नामक समाचार पत्र शुरू किया → **विधवा पुनर्विवाह** जैसे मुद्दे उठाए, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। • **1840** में **दिग्दर्शन** शुरू किया → **विज्ञान और इतिहास** पर लेख प्रकाशित किए। • **बॉम्बे नेटिव जनरल लाइब्रेरी** की स्थापना की। • **नेटिव इम्प्रूवमेंट सोसाइटी** शुरू की → इसकी शाखा: **स्टूडेंट्स लिटरेरी एंड साइंटिफिक लाइब्रेरी**। • **एल्फिन्स्टन कॉलेज** में पहले **हिंदी प्रोफेसर** बने।

परमहंस मंडली:	• **स्थापना:** ○ **महाराष्ट्र (1849)** में **दादोबा पांडुरंग**, **मेहताजी दुर्गाराम** द्वारा स्थापित। ○ प्रारंभ में **हिंदू धर्म और समाज को सुधारने** हेतु एक **गुप्त संगठन।** • **वैचारिक आधार:** ○ **मानव धर्म सभा** से प्रेरित। ○ **एक ईश्वर** की उपासना में विश्वास + **प्रेम और नैतिक आचरण** पर आधारित **वास्तविक धर्म** को बढ़ावा दिया। • **सामाजिक सुधार फोकस:** ○ **जातिगत नियमों** का विरोध → सदस्य **नीची जाति के लोगों द्वारा पकाया भोजन खाते** थे। ○ **विधवा पुनर्विवाह का समर्थन** किया + **महिला शिक्षा को बढ़ावा** दिया।
सत्यशोधक समाज और ज्योतिबा/ज्योति राव फुले:	• **पृष्ठभूमि:** ○ **ज्योतिबा फुले (1827-1890)**, जन्म **सातारा, महाराष्ट्र** में, **माली (माली/माली समुदाय)** से। ○ **ऊँची जातियों के प्रभुत्व** और **ब्राह्मण वर्चस्व** के खिलाफ आंदोलन संगठित किया। • **संस्थापक: सत्यशोधक समाज (सत्य खोजियों का समाज)**, **1873** में। • **उद्देश्य: सामाजिक सेवा + महिलाओं और निम्न जातियों के बीच शिक्षा** का प्रसार। • **कार्य और विचारधारा:** ○ लेखन: **सार्वजनिक सत्यधर्म**, **गुलामगिरी** - जनता को प्रेरित किया। ○ प्रतीक: **राजा बली** (ब्राह्मणों के प्रतीक **राम** के विपरीत)। ○ **संस्कृतिक हिंदू धर्म** और ब्राह्मणों के शोषण की आलोचना की। ○ **1873** में फुले ने **गुलामगिरी** लिखी, जिसका अर्थ है **दासता**। ○ इस पुस्तक से लगभग दस वर्ष पहले **अमेरिकी गृहयुद्ध** लड़ा गया था, जिससे अमेरिका में दासता की समाप्ति हुई। फुले ने अपनी पुस्तक उन सभी **अमेरिकियों** को समर्पित की जिन्होंने **दासों को मुक्त कराने के लिए संघर्ष** किया था।

	• **सुधार:**
	  ○ महिला शिक्षा के अग्रदूत → **पूना** में **सावित्रीबाई फुले** के साथ मिलकर **बालिका विद्यालय** खोला।
	  ○ **महाराष्ट्र** में विधवा पुनर्विवाह आंदोलन शुरू किया।
	  ○ **1854** में विधवाओं का आश्रय गृह स्थापित किया।
	• **मान्यता:** उनके सुधार कार्यों के लिए उन्हें **'महात्मा'** की उपाधि दी गई।

गोपालहरी देशमुख 'लोकहितवादी' (1823-1892):	• **प्रोफ़ाइल:** सामाजिक सुधारक, तर्कवादी, **महाराष्ट्र** से; **ब्रिटिश राज** के अधीन **न्यायाधीश** रहे।
	• **लेखन:**
	  ○ साप्ताहिक **प्रभाकर** में **लोकहितवादी** उपनाम से लिखा।
	  ○ भारतीय **समाज के पुनर्गठन** की वकालत की → तर्कसंगत, धर्मनिरपेक्ष, मानवतावादी मूल्यों पर।
	  ○ उद्धरण: **"यदि धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देता, तो धर्म बदल दो।"**
	• **योगदान:**
	  ○ **हितेच्छु**, **ज्ञान प्रकाश**, **इंदु प्रकाश**, **लोकहितवादी** पत्रिकाओं की स्थापना/संपादन किया।

गोपाल गणेश आगरकर (1856-1895):	• शिक्षाविद, सामाजिक सुधारक, **महाराष्ट्र** से।
	• **योगदान:**
	  ○ **न्यू इंग्लिश स्कूल**, **डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी**, **फर्ग्यूसन कॉलेज** के सह-संस्थापक।
	  ○ **फर्ग्यूसन कॉलेज** के प्राचार्य।
	• **केसरी** (जिसकी स्थापना **लोकमान्य तिलक** ने की) के पहले संपादक।
	• बाद में **सुधारक** की स्थापना की → **अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था** के खिलाफ आवाज़ उठाई।

सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी (1905):	• **संस्थापक: गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915)**, **एम.जी. रानाडे** की मदद से।. • **उद्देश्य:** ○ भारत की सेवा के लिए **राष्ट्रीय मिशनरियों को प्रशिक्षित** करना। ○ **संवैधानिक तरीकों** से भारतीय हितों को बढ़ावा देना। ○ **धार्मिक भावना** के साथ **निःस्वार्थ कार्यकर्ताओं** का एक दल तैयार करना।. • **गतिविधियाँ:** ○ **हितवाद (1911)** शुरू किया ताकि समाज के विचार प्रस्तुत किए जा सकें। ○ कांग्रेस राजनीति से दूर रहने का निर्णय लिया। • **नेतृत्व:** ○ **गोखले** की मृत्यु (1915) के बाद → **श्रीनिवास शास्त्री** अध्यक्ष बने।
सोशल सर्विस लीग (बॉम्बे):	• **संस्थापक: नारायण मल्हार जोशी**, **गोखले** के अनुयायी। • **उद्देश्य:** जनता के **जीवन और कार्य की स्थिति में सुधार**। • **गतिविधियाँ:** ○ **स्कूल, पुस्तकालय, पठन कक्ष, नर्सरी, सहकारी संस्थाएँ** संगठित कीं। गरीबों को **कानूनी सहायता, परामर्श, सफाई कार्य, चिकित्सीय सहायता** प्रदान की। ○ **एन.एम. जोशी** ने **ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (1920)** की भी स्थापना की।
इंडियन सोशल कॉन्फ्रेंस (1887 से):	• **संस्थापक: एम.जी. रानाडे**, **रघुनाथ राव**। • **पहला अधिवेशन: मद्रास, 1887**, **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** के साथ। • **स्वरूप:** इसे "**आईएनसी की सामाजिक सुधार शाखा**" कहा गया। • **उद्देश्य: अंतरजातीय विवाह** का **समर्थन** किया + **बहुपत्नी प्रथा** और **कुलीनवाद का विरोध** किया। • **प्रतिज्ञा आंदोलन** शुरू किया: लोगों को **बाल विवाह के खिलाफ** प्रतिज्ञा लेने के लिए प्रेरित किया।
सेवा सदन (1908):	• **संस्थापक: बेहरामजी एम. माला-बारी**, एक **पारसी सुधारक**, **दीवान दयाराम गिदुमल** के साथ। • **माला-बारी के सुधार: बाल विवाह** के खिलाफ बोले + हिंदुओं में **विधवा पुनर्विवाह** की वकालत की।

	○ उनके प्रयासों से **एज ऑफ कंसेंट एक्ट** (महिलाओं के लिए न्यूनतम सहमति आयु तय करने वाला कानून) आया। • **बी.एम. माला-बारी** ने पत्रिका **इंडियन स्पेक्टेटर** का अधिग्रहण व संपादन किया।
देव समाज (1887, लाहौर):	• **संस्थापक: शिव नारायण अग्निहोत्री (1850-1927)**, पहले **ब्रह्मो अनुयायी**। • **शिक्षा: आत्मा की अनंतता और गुरु की सर्वोच्चता** पर जोर। • **साहित्य:** शिक्षाएँ **देव शास्त्र** में संकलित की गईं।
धर्म सभा (1830, कलकत्ता):	• **संस्थापक: राधाकांत देव।** • **स्वरूप:** एक **रूढ़िवादी हिंदू समाज।** • **विचारधारा: सामाजिक-धार्मिक मामलों** में यथास्थिति की रक्षा की + **सती प्रथा के उन्मूलन** तक का विरोध किया।
भारत धर्म महामंडल (1902, वाराणसी मुख्यालय):	• **संरचना:** परंपरावाद की रक्षा करने वाले संगठनों का संयोजन: ○ **सनातन धर्म सभा (1895)**। ○ **धर्म महा परिषद (दक्षिण भारत)**। ○ **धर्म महामंडली (बंगाल)**। • **उद्देश्य:** ○ **रूढ़िवादी हिंदू धर्म** की रक्षा करना, **आर्य समाज**, **थियोसोफिस्ट्स**, **रामकृष्ण मिशन** के खिलाफ। ○ **हिंदू धार्मिक संस्थानों** का उचित प्रबंधन। ○ **हिंदू शैक्षिक संस्थानों** की स्थापना। • **नेता: पंडित मदन मोहन मालवीय** प्रमुख व्यक्तित्व थे।
राधास्वामी आंदोलन (1861, आगरा):	• **संस्थापक: तुलसी राम (शिव दयाल साहेब)**, **आगरा** के एक बैंकर। • **विश्वास:** एक **सर्वोच्च सत्ता और गुरु की सर्वोच्चता।** • **सत्संग** का महत्व + **आध्यात्मिक उपलब्धि** के लिए सांसारिक जीवन का त्याग आवश्यक नहीं।
श्री नारायण गुरु धर्म परिपालना	• **नेता: श्री नारायण गुरु स्वामी (1856-1928)**, **एझवा जाति** (ताड़ी निकालने वाले, अस्पृश्य माने जाते थे) से।

(SNDP) आंदोलन (1888-1903, केरल):	• **पृष्ठभूमि: एझवा** = **केरल** की सबसे बड़ी जाति (**26%** जनसंख्या), जिन्हें **शिक्षा और मंदिर प्रवेश** से **वंचित** रखा गया।
	• **अरुविप्पुरम आंदोलन (1888): नारायण गुरु** ने **अरुविप्पुरम** में **शिवरात्रि** पर **शिवलिंग** की स्थापना की।
	  ○ **उच्च जातियों** के मूर्ति-प्रतिष्ठा पर एकाधिकार को चुनौती दी + कवि **कुमारन अशन** (शिष्य) को प्रेरित किया।
	• **संगठन:**
	  ○ **अरुविप्पुरम क्षेत्र योगम (1889)** → विस्तारित होकर **SNDP योगम (1903)** बना।
	  ○ **इंडियन कंपनीज़ एक्ट** के तहत पंजीकृत।
	  ○ **अध्यक्ष:** नारायण गुरु, **सचिव:** कुमारन अशन।
	• **शिक्षाएँ:** सभी धर्म **समान** हैं।
	• **मांगें: स्कूलों, सरकारी सेवाओं, सड़कों और मंदिरों** तक पहुँच, **राजनीतिक प्रतिनिधित्व।**
	• **नारा: "ओरु जाति, ओरु मतम, ओरु दैवम मनुष्यनु"** (एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर मानवता के लिए)।

सेल्फ-रिस्पेक्ट आंदोलन (1920 के दशक का मध्य, तमिलनाडु):	• **संस्थापक: ई.वी. रामास्वामी नायकर (पेरियार)।**
	• **उद्देश्य: ब्राह्मणवादी धर्म और संस्कृति** को अस्वीकार करना + **ब्राह्मण पुजारियों** के अधिकार को कमजोर करना।
	• **सुधार:**
	  ○ **ब्राह्मण पुजारियों के बिना विवाह कराए।**
	  ○ **तर्कवाद, सामाजिक समानता और नीची जातियों की गरिमा को बढ़ावा** दिया।

जस्टिस आंदोलन (मद्रास प्रेसीडेंसी, 1916-17):	• **नेता: सी.एन. मुदलियार, टी.एम. नायर, पी. त्यागराजा।** • **उद्देश्य: गैर-ब्राह्मणों** के लिए **नौकरियाँ** और **विधानमंडल में प्रतिनिधित्व** सुनिश्चित करना। • **विकास: मद्रास प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1917)** का गठन हुआ। • **मांग: विधानमंडल** में **निम्न जातियों** के लिए **पृथक प्रतिनिधित्व।**

मंदिर प्रवेश आंदोलन (केरल, मद्रास प्रेसीडेंसी):

- **प्रारंभिक सुधारक: श्री नारायण गुरु** और **एन. कुमारन अशन** ने मंदिर प्रवेश के लिए कार्य किया।
  - **टी.के. माधवन** (**देशाभिमानी** के संपादक) ने इस मुद्दे को **त्रावणकोर प्रशासन** के समक्ष उठाया।
- **वैकोम सत्याग्रह (1924): केन्द्र: वैकोम (त्रावणकोर, केरल) + नेता: के.पी. केसव।**
  - **मांग: मंदिर की सड़कों और मंदिरों को अस्पृश्यों** के लिए **खोलना।**
  - **महात्मा गांधी** ने समर्थन में **केरल का दौरा** किया।
- **गुरुवायूर सत्याग्रह (1931): सविनय अवज्ञा आंदोलन** के स्थगन के बाद शुरू किया गया।
  - **नेता: के. केलप्पन**, कवि **सुब्रमणियम तिरुमंबु** ("केरल की गाती हुई तलवार"), **पी. कृष्ण पिल्लई**, **ए.के. गोपलन**।
- **उपलब्धियाँ:**
  - **त्रावणकोर मंदिर प्रवेश उद्घोषणा (12 नवम्बर 1936):** महाराजा ने सभी सरकारी-नियंत्रित मंदिरों को सभी हिंदुओं के लिए खोल दिया।
  - **मद्रास प्रेसीडेंसी: सी. राजगोपालाचारी** प्रशासन ने **1938** में इसी प्रकार का कदम उठाया।

परंपरागत हिंदू समाज की प्रतिक्रिया:

- सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के विरोध में **सनातन धर्म सभा** और **भारत धर्म महामंडल** (उत्तर भारत में) तथा **ब्रह्मण सभा** (बंगाल में) जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई।
- इन संगठनों का उद्देश्य था: **जातिगत भेदभाव को हिंदू धर्म की आधारशिला** के रूप में बनाए रखना, और दिखाना कि यह कैसे **शास्त्रों द्वारा अनुमोदित** था।

रामकृष्ण आंदोलन:	
रामकृष्ण परमहंस:	• **रामकृष्ण परमहंस (1836-1886)** ○ **गदाधर चट्टोपाध्याय** के रूप में जन्मे, **काली मंदिर, दक्षिणेश्वर (कलकत्ता)** के पुजारी। ○ उन्होंने पुस्तकें नहीं लिखीं → उनकी शिक्षाएँ वार्तालाप, दृष्टांत और रूपकों में संरक्षित रहीं। • **शिक्षाएँ और दर्शन:** ○ सभी धर्मों की एकता में विश्वास किया: **"जितने मत, उतने पथ।"** ○ घोषित किया: **"मनुष्य की सेवा ही भगवान की सेवा है।"**

	○ **कृष्ण, हरि, राम, क्राइस्ट, अल्लाह** को एक ही परमात्मा के अलग-अलग नाम माना। • संन्यासी शिष्यों के साथ **रामकृष्ण मठ** की स्थापना की (संन्यास और वेदांत के लिए)।
स्वामी विवेकानंद:	• जन्म नाम **नरेन्द्रनाथ दत्त** → बने **स्वामी विवेकानंद**। • **रामकृष्ण** के शिष्य, उनके संदेश को फैलाया → **नव-हिंदुत्व के उपदेशक।** • **दर्शन और संदेश:** ○ आधार: **रामकृष्ण** के अनुभव, **उपनिषद**, **गीता**, **बुद्ध**, **ईसा मसीह**। ○ **वेदांत** को तर्कसंगत और सार्वभौमिक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया। ○ **प्रायोगिक वेदांत** पर जोर दिया: **परमार्थ (सेवा)** और **व्यवहार (दैनिक जीवन)** की एकता। • **विश्व धर्म संसद, शिकागो (1893): वेदांत की व्याख्या** से विश्व को प्रभावित किया। ○ पश्चिम के **भौतिकवाद** और पूर्व के **अध्यात्मवाद** के **संतुलन की वकालत** की।
रामकृष्ण मिशन (1897):	• **स्वामी विवेकानंद** द्वारा **1897** में स्थापित, अपने गुरु **श्री रामकृष्ण** की शिक्षाओं को फैलाने के लिए। • **बेलूर (कलकत्ता के निकट)** में स्थापित; **रामकृष्ण मठ** को स्थानांतरित कर **1898** में पंजीकृत किया गया। • **मिशन** = सामाजिक और मानवीय कार्य (स्कूल, अस्पताल, अकाल/बाढ़ राहत)। • **सिद्धांत: जीव की सेवा ही शिव की सेवा है।** • अध्यात्म की सहायता के रूप में **मूर्ति पूजा** को स्वीकार किया।

दयानंद सरस्वती और आर्य समाज

संस्थापक और पृष्ठभूमि:

- **दयानंद सरस्वती / मूलशंकर (1824-1883): गुजरात** के **मोरवी राज्य** में एक ब्राह्मण परिवार में जन्म।
- **सत्य की खोज:** 15 वर्षों तक (1845-60) संन्यासी के रूप में भटकते रहे।
- **आर्य समाज की स्थापना:** पहला केंद्र **बॉम्बे (1875)** में स्थापित; बाद में मुख्यालय **लाहौर** स्थानांतरित।
- **शिक्षा: स्वामी विरजानंद (नेत्रहीन गुरु, मथुरा)** के शिष्य।

- **सत्यार्थ प्रकाश (The True Exposition):** उनकी प्रसिद्ध कृति, जिसमें एक **वर्गहीन, जातिहीन, एकीकृत भारत** का दृष्टिकोण था, विदेशी शासन से मुक्त।
- **नारा - "वेदों की ओर लौटो":** वैदिक शिक्षा और पवित्रता के पुनरुद्धार का आह्वान, न कि वैदिक युग की पुनरावृत्ति।
- **धार्मिक दृष्टिकोण:**
  - **एकेश्वरवाद:** वेदों को शाश्वत और अचूक प्रामाणिकता माना + बिना मध्यस्थ के **ईश्वर तक व्यक्तिगत पहुँच।**
  - **पुराणों, मूर्तिपूजा, पुजारीवाद, बहुदेववाद, पशुबलि, तंत्र-मंत्र, वर्जनाओं** की आलोचना की।
  - **चतुर्वर्ण** की वकालत की → जन्म से नहीं बल्कि **योग्यता और पेशे** के आधार पर।
- **परंपरा पर प्रहार: जातिगत कठोरता, अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, बहुपत्नी प्रथा, श्राद्ध, समुद्र यात्रा** पर प्रतिबंध की निंदा की।
- **शुद्धि आंदोलन:**.
  - **ईसाई/इस्लाम** से हिंदुओं का पुनः धर्मांतरण।
  - अस्पृश्यों को जाति व्यवस्था में उठाने का प्रयास।
- **अन्य सुधारकों से संबंध: दयानंद** ने **केशवचंद्र सेन**, **ईश्वर चंद्र विद्यासागर**, **रानाडे**, **गोपालहरी देशमुख** आदि से संवाद किया।

शैक्षिक पहल:

- **दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) कॉलेज, लाहौर (1886):** दयानंद की मृत्यु के बाद स्थापित।
- **गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार, 1902): स्वामी श्रद्धानंद** द्वारा स्थापित; यहाँ वैदिक साहित्य, दर्शन, संस्कृति और आधुनिक विज्ञान पढ़ाए जाते थे।

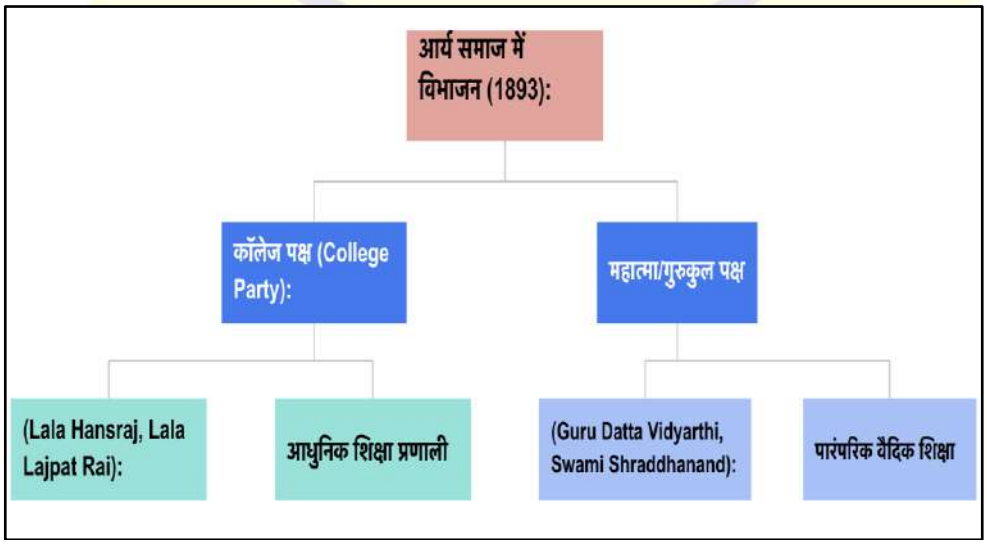

मुस्लिम सुधार आंदोलन:

वहाबी / वल्लीउल्लाह आंदोलन	• **प्रेरणाएँ: अब्दुल वहाब (अरब), शाह वल्लीउल्लाह (1702-1763, भारत)** → सच्चे इस्लाम के **पुनर्जागरण का आह्वान।** • **वल्लीउल्लाह के आदर्श:** मुस्लिम न्यायशास्त्र के चारों स्कूलों में सामंजस्य। • **बाद के नेता: शाह अब्दुल अज़ीज, सैयद अहमद बरेलवी।** • **शिक्षाएँ:** गैर-इस्लामी प्रथाओं को हटाना और पैगंबर के समय जैसा शुद्ध इस्लाम अपनाना। • **लक्ष्य:** प्रारंभ में **पंजाब में सिखों** के खिलाफ; **ब्रिटिश अधिग्रहण (1849)** के बाद आंदोलन ब्रिटिशों के खिलाफ हो गया। • **1857 के विद्रोह में भूमिका: ब्रिटिश विरोधी** भावनाएँ फैलाना।
टीटू मीर का आंदोलन (बंगाल, 1830 का दशक)	• **नेता: मीर निथार अली (टीटू मीर), सैयद अहमद बरेलवी** के शिष्य। • **विचारधारा: वहाबवाद** को अपनाया और **शरिया कानून** की वकालत की। • **समर्थन आधार: बंगाल** के **मुस्लिम किसानों को संगठित** किया → **हिंदू जमींदारों और ब्रिटिश नील किसानों के खिलाफ।**

फराइज़ी आंदोलन (1818-1862, पूर्वी बंगाल):	• **संस्थापक: हाजी शरियतुल्लाह (1818)**
	• **केंद्रबिंदु:**
	  ○ **फराइज़ (इस्लामी स्तंभों/आस्था के स्तंभों)** पर जोर।
	  ○ **बंगाल** के मुसलमानों में **गैर-इस्लामी प्रथाओं को हटाना।**
	• **दुदु मियां (1840 से आगे) के तहत विस्तार:**
	  ○ संगठनात्मक ढांचा: गाँव से प्रांतीय स्तर तक **खलीफ़ा (उप-प्रमुख)** प्रणाली।
	  ○ जमींदारों और नील किसानों से लड़ने के लिए **अर्द्धसैनिक बल (लाठी क्लब)** का गठन।
	  ○ **किराया न देने का अभियान:** अनुयायियों से कहा गया कि किराया न दें।
	  ○ समानांतर **कानूनी अदालतों** की स्थापना की।

अहमदिया आंदोलन (1889):	• **संस्थापक: मिर्ज़ा गुलाम अहमद (1889, भारत)।** • **सिद्धांत:** ○ **उदार सिद्धांतों** पर आधारित + **जिहाद (धार्मिक युद्ध)** का विरोध।

	○ उद्देश्य: **मानवता** का एक **सार्वभौमिक धर्म** (जैसे **ब्रह्म समाज**)। ○ **मस्जिद और राज्य के पृथक्करण** की वकालत की।
सर सैयद अहमद खान (1817-1898) और अलीगढ़ आंदोलन	• **पृष्ठभूमि: 1857 के विद्रोह** के बाद ब्रिटिशों ने मुसलमानों को मुख्य षड्यंत्रकारी माना (जिसे वहाबी गतिविधियों ने और मजबूत किया)। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि मुसलमानों को उभरते **राष्ट्रवाद (आईएनसी) के खिलाफ सहयोगी के रूप में इस्तेमाल** किया जा सकता है → इसलिए रियायतें दी गईं। • **सर सैयद अहमद खान:** एक **सम्मानित मुस्लिम परिवार** में जन्म + ब्रिटिश सरकार की **न्यायिक सेवा में वफादार सदस्य।** ○ **1876** में सेवानिवृत्त हुए, **1878** में **इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल** के सदस्य बने। ○ **1888** में **नाइटहुड** की उपाधि प्राप्त की। • **शैक्षिक कार्य: पश्चिमी विज्ञान और कुरान** के मेल की वकालत की (**तर्कवाद** के माध्यम से पुनर्व्याख्या)। ○ धर्म को समय के साथ अनुकूलित होना चाहिए, जीवाश्म नहीं बनना चाहिए। ○ नगरों में स्कूल खोले, पुस्तकों का **उर्दू** में अनुवाद किया। ○ **मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज, अलीगढ़ (1875)** की स्थापना की → बाद में **अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय** बना। • **राजनीतिक दृष्टिकोण:** बाद में **हिंदू-मुस्लिम हितों में भिन्नता का प्रचार** किया, ब्रिटिशों की **"फूट डालो और राज करो"** नीति से मेल खाया। • **पत्रिका: तहज़ीब-उल-अख़लाक़ (आचरण और नैतिकता का सुधार)**।
देओबंद स्कूल (दारुल उलूम):	• **स्वरूप और उद्देश्य: रूढ़िवादी उलेमा** द्वारा एक **पुनरुद्धारवादी आंदोलन** के रूप में संगठित। ○ उद्देश्य: **कुरान और हदीस** की शुद्ध शिक्षाओं का प्रचार करना। • **स्थापना: दारुल उलूम, देओबंद (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, 1866)** में। ○ संस्थापक: **मोहम्मद क़ासिम नानौतवी और राशिद अहमद गंगोही।** ○ उद्देश्य: मुस्लिम समुदाय के लिए **धार्मिक नेताओं** को प्रशिक्षित करना। • **अलीगढ़ आंदोलन से भिन्नता:** ○ **अलीगढ़: पश्चिमी शिक्षा** पर ध्यान, ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी।

	○ **देओबंद:** इस्लामी शिक्षा के माध्यम से **नैतिक और धार्मिक पुनर्जागरण** पर ध्यान। • **राजनीतिक भूमिका: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** के गठन का स्वागत किया। ○ **1888 का फ़तवा: सैयद अहमद खान** के संगठनों (यूनाइटेड पैट्रियॉटिक एसोसिएशन, मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल एसोसिएशन) के खिलाफ।

पारसी सुधार आंदोलन:

- **संगठन: रहनुमाई मज़दयासनन सभा (1851, बॉम्बे)**।
- **नेता: नौरोजी फुर्दोंजी**, **दादाभाई नौरोजी**, **के.आर. कामा**, **एस.एस. बंगाली**।
- **उद्देश्य:**
  - **पारसी समाज** का पुनरुत्थान।
  - **जरथुस्त्र धर्म (ज़ोरोएस्ट्रियनिज़्म)** की पवित्रता की पुनर्स्थापना।
  - सुधारों का प्रसार **रस्त गोफ्तार (ट्रुथ टेलर)** के माध्यम से।
- **सुधार:**
  - धार्मिक अनुष्ठानों में संशोधन और पारसी आस्था की पुनर्परिभाषा।
  - **पारसी महिलाओं** का सामाजिक उत्थान → **पर्दा प्रथा** का अंत, विवाह की उच्च आयु, महिला शिक्षा।
  - **परिणाम:** पारसी सबसे **अधिक पश्चिमीकृत समुदाय** के रूप में उभरे।

सिख सुधार आंदोलन:

सिंह सभा आंदोलन (1873, अमृतसर):	• **अमृतसर** में स्थापित। • **उद्देश्य:** i. आधुनिक पश्चिमी शिक्षा का प्रसार (**खालसा स्कूलों** के माध्यम से)। ii. **ईसाई मिशनरियों**, **ब्रह्मो**, **आर्य समाजियों**, **मुस्लिम मौलवियों** का मुकाबला करना। • विरोधी-सिख प्रथाओं को अस्वीकार किया, **गुरु की शिक्षाओं** की पुनः पुष्टि की।
अकाली (गुरुद्वारा सुधार)	• **सिंह सभा आंदोलन** की एक शाखा था। • **उद्देश्य:** भ्रष्ट **उदासी महंतों** (वंशानुगत, सरकार-निष्ठ) से **गुरुद्वारों** की मुक्ति। • दमन के बावजूद **अहिंसक सत्याग्रह** अपनाया गया।

आंदोलन (1921–25):	• **परिणाम: सिख गुरुद्वारा अधिनियम, 1922** (1925 में संशोधित) → गुरुद्वारे **शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (SGPC)** के अधीन आए। • यद्यपि यह **आंदोलन क्षेत्रीय** था, पर **साम्प्रदायिक नहीं → अकाली नेताओं** ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

थियोसोफिकल आंदोलन

- **उत्पत्ति: 1875, न्यूयॉर्क** में **मैडम एच.पी. ब्लावात्स्की** और **कर्नल एम.एस. ऑलकॉट** द्वारा स्थापित।
- **मुख्यालय: 1882** में **अडयार (मद्रास)** स्थानांतरित।
- **मान्यताएँ: उपनिषद**, **सांख्य**, **योग**, **वेदांत** से प्रेरणा ली।
- **भारत में कार्य: हिंदू पुनर्जागरण** से जुड़ा, आंशिक रूप से **आर्य समाज** से भी।
  - **बाल विवाह** और **जातिगत भेदभाव** का विरोध किया।
  - **विधवाओं के उत्थान** और **अस्पृश्यों की शिक्षा** का समर्थन किया।
- **एनी बेसेंट (1847-1933): 1893** में भारत आईं, **1907** में अध्यक्ष बनीं।
  - **सेंट्रल हिंदू कॉलेज, बनारस (1898)** की स्थापना की → जो आगे चलकर **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (1916)** का केंद्र बना।
  - **महिलाओं की शिक्षा** की प्रमुख समर्थक रहीं।